Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23071
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23071

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

CONFERENCE PAPER

भारतीय संगीत की समृद्धि में गुरु-शिष्य परंपरा का योगदान : पंडित अरविंद पारिख की शिष्य परंपरा के विशेष संदर्भ में

हरमिंदर कौर

1. शोधकर्ता संगीत विभाग पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Abstract

गुरु-शिष्य परम्परा एक प्राचीन भारतीय परम्परा है, जिसमें गुरु (शिक्षक) अपने शिष्यों को ज्ञान, कौशल और सही मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यह परम्परा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका उद्देश्य केवल शिष्यों को ज्ञान प्रदान करवाना ही नहीं, बल्कि उन्हें जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए तैयार करना भी है। गुरु वह व्यक्ति होता है जो शिष्य को ज्ञान और कौशल प्रदान करता है। गुरु का उच्च पद होने के कारण शिष्य उनका आदर करते हैं। शिष्य वह व्यक्ति होता है जो गुरु से ज्ञान और कौशल प्राप्त करता है। शिष्य को गुरु के प्रति श्रद्धा और आदर रखना आवश्यक है। इस प्रकार गुरु और शिष्य का संबंध अत्यंत गहरा और भावनात्मक होता है। गुरु अपने शिष्य को अपने बच्चे के समान प्रेम और स्नेह से शिक्षा देते हैं। संगीत में गुरु-शिष्य परम्परा का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है, जैसा कि वेदों से प्रमाणित होता है। पंडित अरविंद पारिख के अनुसार, "शिष्य के जीवन में गुरु का बहुत महत्व होता है। जब मैंने अपने गुरु उस्ताद विलायत खान साहब से सितार सीखना शुरू किया, तो पहले छह महीने मेरे लिए बहुत कठिन थे, क्योंकि गुरु जी मुझे सितार सिखाने के लिए मेरे घर आते थे, लेकिन शुरुआती दिनों में वे केवल दो बार ही आए। उसके बाद जब मैं उनके घर जाने लगा, तो रईस खान उस्ताद विलायत खान साहब के कहे अनुसार कहते थे कि मामा जी घर पर नहीं हैं। मैंने कई बार घर के बाहर बैठकर प्रतीक्षा भी की।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- हरमिंदर कौर
Address:- शोधकर्ता संगीत विभाग पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला.

छह महीने बाद उस्ताद विलायत खान साहब ने महसूस किया कि मैं संगीत के प्रति पूरी तरह समर्पित और संवेदनशील हूँ और यह मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है कि इसके बाद से हम 60 वर्षों तक साथ रहे हैं।"[i] इस प्रकार, पंडित अरविंद पारिख ने अपने गुरु और संगीत के प्रति आदर दिखाते हुए एक अच्छे शिष्य होने का प्रमाण दिया, जिसके फलस्वरूप वे स्वयं अपने परिश्रम से एक महान गुरु बनकर संगीत के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

[i] पंडित अरविंद पारिख के साथ साक्षात्कार, मुंबई, 27 मार्च 2024

Introduction:-

वर्तमान में, इमदादखानी घराना के प्रख्यात कलाकार पंडित अरविंद पारिख अपने संगीत कार्यों के माध्यम से अपने घराने का प्रचार कर रहे हैं और गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार अपने शिष्यों को सितार, सुरबहार, गायन आदि की शिक्षा दे रहे हैं। पंडित अरविंद पारिख अपने गुरु से प्राप्त शिक्षा के अनुसार देश-विदेश के कई शिष्यों को संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। पंडित जी ने अपने शिष्यों में ऐसे अनेक शिष्य तैयार किए हैं, जो वर्तमान में हिंदुस्तानी संगीत के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। डॉ. अश्विन महेश दलवी (पंडित अरविंद पारिख के शिष्य) बताते हैं, "पंडित अरविंद पारिख एक आदर्श गुरु हैं। पंडित जी संगीत के बुनियादी स्तर से लेकर उन्नत स्तर तक के शिष्यों को समान रूप से लगन से सिखाते हैं। अक्सर देखा जाता है कि अधिकांश कलाकार छोटे बच्चों, शुरुआती और नए बच्चों को सिखाने या प्रशिक्षण देने में कम रुचि दिखाते हैं, लेकिन गुरु जी में धैर्य रखने और अपने शिष्यों को कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करने की स्वाभाविक क्षमता है यह मेरा निजी अनुभव है।

"[i] पंडित अरविंद पारिख के शिष्यों की सूची काफी लंबी है। अब तक उन्होंने लगभग 46 शिष्यों को संगीत शिक्षा प्रदान की है, जो देश और विदेश में संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। इनमें से कुछ शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं: श्रीमती स्वर्णलता राव, श्री अभिक मुखर्जी, श्री अल्ताफ खान, श्रीमती अमृता कुलकर्णी, श्रीमती अमृता मोरे, डॉ. अश्विन महेश दलवी, श्री दीपक एस. राजा, डॉ. गोपाल कृष्ण, श्री हरप्रीत सिंह हसरत, श्री इलास पटेल (लंदन), श्री जेम्स पूसे (यूके), स. जसपाल सिंह कलसी, श्रीमती ज्योति श्याम, श्री कमलेश तिवारी, श्री किरण शिंदे, श्रीमती मधुरा करंबेलकर, श्रीमती मंजरी सिन्हा, श्री मारुति पाटिल, श्री मेहबूब नदीम, श्री निशाद मिस्त्री, श्री नितिन परमार, श्री परेश पारेख, श्रीमती प्रसन्ना शास्त्री, श्री प्रथमेश पारिख, श्री परमेल बहाना, श्रीमती प्रियदर्शनी आरके सिंगजेमई, श्री राजीव जनार्दन, डॉ. शोभित नाहर, श्रीमती सुभाषा मिश्रा, श्री सुंदरनाथ, श्री सुप्रियो दत्ता, श्रीमती सुषमा जहावेरी, श्रीमती नंदना सहवानी, श्री वरद भोसले, श्रीमती वंदना सोहेल, श्री विजय गोनाहलो आदि।वर्तमान में उपर्युक्त शिष्यों में से कुछ का चयन किया गया है, जो पंडित अरविंद पारिख से गायन और वादन की शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ संगीत के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके साथ ही पंडित जी ने अपने शिष्यों को रिकॉर्डिंग के कुछ तकनीकी पहलुओं की भी शिक्षा दी, जिनके उपयोग से गायन, वादन और संगीत को समझने में काफी सहायता मिली।

इनका विवरण इस प्रकार है:-

1. श्री दीपक एस. राजा (सितार वादक और प्रख्यात लेखक)
2. डॉ. अश्विन महेश दलवी (सितार और सुरबहार वादक)
3. श्री रामप्रपन्ना भट्टाचार्य (सितार और सुरबहार वादक)

श्री दीपक एस. राजा: श्री दीपक एस. राजा एक प्रख्यात संगीत विद्वान और लेखक हैं, जिन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विभिन्न शोध कार्यों पर गहन शोध किया है। श्री दीपक एस. राजा का जन्म 12 मार्च, 1948 को दिल्ली में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री शांतिकुमार राजा और माता का नाम श्रीमती कमलिनी है। श्री दीपक एस. राजा के अनुसार, "पांच वर्ष की आयु में मुझे अपनी माताजी के सितार में रुचि हो गई, लेकिन मैं सितार बजाना नहीं जानता था, इसलिए विद्यालय में शिक्षक ने मुझे गायन और

तबला वादन सिखाना शुरू कर दिया।"[i] इस प्रारंभिक शिक्षा ने उनके भीतर संगीत की गहरी समझ विकसित की, जिसने बाद में उनकी संगीत यात्रा की मजबूत नींव रखी। इसके बाद, उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अपना करियर शुरू करने के लिए मुंबई का रुख किया। श्री दीपक एस. राजा कहते हैं, "मुंबई आने के बाद, जहाँ मैंने अपना निवास स्थान बनाया, पंडित अरविंद मेरे पड़ोसी थे और यहाँ रहते हुए मेरे परिवार और पंडित अरविंद पारिख के परिवार के बीच बहुत सौहार्दपूर्ण संबंध विकसित हुए। इसीलिए मैंने लगभग 1970-71 में पंडित अरविंद पारिख से सितार सीखना शुरू किया था। उस समय उनके केवल चार शिष्य थे, लेकिन आधुनिक समय में गुरु जी के चालीस से अधिक शिष्य हैं।"[i] पंडित अरविंद पारिख से संगीत की शिक्षा प्राप्त करते समय,

श्री दीपक ने संगीत पर लिखना भी शुरू किया, जिसके परिणामस्वरूप संगीत से संबंधित निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुईं:-

1. Khayal Vocalism Continuity within Change (2009)
2. Raga-ness of Ragas Beyond the Grammar (2009)
3. Hindustani Music Today (2012)
4. Hindustani Music A Tradition in Transition (2015)
5. The Musician and His Art Essays on Hindustani Music (2019)

उपरोक्त सभी पुस्तकें 'डी.के. प्रेसवर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड', नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई हैं। श्री दीपक एस. राजा 'दीपक राजा वर्ल्ड ऑफ हिंदुस्तानी म्यूजिक' नामक हिंदुस्तानी संगीत से संबंधित एक ब्लॉग भी चलाते हैं, जिसमें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रागों, घरानों और महान कलाकारों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। वे संगीत की बारीकियों, गायन शैलियों और वाद्ययंत्रों के इतिहास के बारे में अत्यंत विद्वतापूर्ण जानकारी साझा करते हैं। यह ब्लॉग संगीत सीखने वालों और प्रेमियों के लिए एक अनमोल खजाना है। इन ब्लॉगों को पढ़ने के लिए दिए गए लिंक " http://swaratala.blogspot.com/ " पर क्लिक करें।

वादन शैली :-

श्री दीपक एस. राजा एक प्रख्यात लेखक होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध सितार वादक भी हैं। उनके पसंदीदा राग मुल्तानी, भीमपलासी, श्री, ललित, मलकौंस, भैरवी आदि हैं। उन्हें तिनताल और एकताल में वादन करना पसंद है। श्री दीपक एस. राजा राग का विस्तार करते हुए स्वरों, खटका, मींड, मुरकियाँ आदि का अत्यंत सुंदर ढंग से प्रयोग करते हैं। श्री दीपक एस. राजा केवल अपने मधुर सितार वादन से श्रोताओं को प्रसन्न नहीं करते, बल्कि राग की लय पर पूरा ध्यान रखते हुए श्रोताओं को संगीत का आनंद दिलाने के साथ-साथ उन्हें संगीत का ज्ञान भी प्रदान करते हैं। उपरोक्त योगदान के लिए, श्री दीपक एस. राजा को वर्ष 2009 में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा वरिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप से सम्मानित किया गया था और उन्हें डॉ. वसंतराव देशपांडे स्मृति सम्मान, पुणे (2013), गुजरात गौरव सम्मान (2014), डॉ. अशोक रानांदे मेमोरियल अवार्ड, महाराष्ट्र (2015) आदि सहित कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। श्री दीपक हिंदुस्तानी संगीत के सम्मानित लेखकों में से एक हैं और वर्तमान में मुंबई में रहते हुए संगीत के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

डॉ. अश्विन महेश दलवी:-

डॉ. अश्विन महेश दलवी एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय सितार और सुरबहार वादक हैं और राजस्थान सरकार में राज्य मंत्री के पद पर रहते हुए राजस्थान ललित कला अकादमी (जयपुर) के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। डॉ. अश्विन महेश दलवी ने सितार और सुरबहार वादन की परम्परा को नई दिशा और एक विशिष्ट पहचान प्रदान करने वाले कलाकार के रूप में लोकप्रियता हासिल की है। डॉ. अश्विन महेश दलवी का जन्म 26 अक्टूबर, 1977 को जयपुर (राजस्थान) में हुआ था। उनके पिता श्री महेश दलवी तबला वादक हैं और माता श्रीमती नीता महेश दलवी सितार वादिका हैं। सितार में उनकी पहली गुरु उनकी माता ही हैं। डॉ. अश्विन महेश दलवी के अनुसार, "संगीत को पेशे के रूप में अपनाने का कोई विचार नहीं था। टेनिस खेलना मेरा शौक था और मैं इसे अपना पेशा बनाना चाहता था,

लेकिन जब मैंने महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात) से बी.ए की पढ़ाई के लिए संगीत विषय चुना, तो मैंने संगीत को ही अपना पेशा बनाने का फैसला किया।"[i] इसके बाद राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से संगीत में एम.ए.
और प्रसिद्ध सितार वादक पंडित निखिल बनर्जी पर शोध कार्य करके पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस प्रकार संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ने का उनका निर्णय उनके लिए बहुत शुभ सिद्ध हुआ। 2003 में उन्हें पंडित अरविंद पारिख के पास जाने का अवसर मिला। प्रारंभ में उन्होंने सितार सीखना शुरू किया। एक बार एक कार्यक्रम में सुरबहार का प्रदर्शन होना था, लेकिन सुरबहार वादक किसी कारणवश नहीं आ सके, इसलिए उन्होंने गुरुजी से बात की और उनसे कार्यक्रम में सुरबहार बजाने की अनुमति लिया। इसके बाद ही मैंने गुरुजी से प्रशिक्षण लेकर सुरबहार बजाना शुरू किया और सुरबहार के प्रथम गुरु पंडित अरविंद पारिख हैं।[i] 2003 से डॉ. अश्विन दलवी पंडित अरविंद पारिख से इटावा घराना में व्यापक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, साथ ही सितार और सुरबहार की बारीकियों को भी सीख रहे हैं।

अकादमिक योगदान:-

डॉ. अश्विन दलवी एक प्रसिद्ध कलाकार होने के साथ-साथ एक अध्यापन कार्य में भी निपुण रहे हैं। उन्होंने महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात), बनस्थली विद्यापीठ विश्वविद्यालय, टोंक (राजस्थान), मीरा गर्ल्स कॉलेज, उधेपर (राजस्थान) आदि कई विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया है। इसके अतिरिक्त, वे मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) और एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात) के अध्ययन बोर्ड के सदस्य भी हैं।डॉ. दलवी के पास 'वाद्यम संगीत वाद्ययंत्र संग्रहालय' में 500 से अधिक लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत वाद्ययंत्रों का संग्रह है, जिसे विश्व संग्रहालयों में शामिल किया गया है। यह एक संगीत संस्थान है, 'नाद-साधन इंस्टीट्यूट फॉर इंडियन म्यूजिक एंड रिसर्च सेंटर' (जयपुर), जिसमें 15,000 घंटे के ऑडियो और वीडियो डेटा का संग्रह है, जो अंतरराष्ट्रीय विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए एक शोध संसाधन के रूप में कार्य करता है। इसके इलावा डॉ. अश्विन दलवी जवाहर कला केंद्र, जयपुर (राजस्थान सरकार), पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (भारत सरकार) और उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (भारत सरकार) के बोर्ड सदस्य भी रह चुके हैं।

वादन शैली :-

डॉ. अश्विन ने इटावा घराने की बारीकियों को गंभीरता से आत्मसात किया है। सितार बजाने के साथ-साथ वे सुरबहार बजाने में भी निपुण हैं। डॉ. अश्विन इमदादखानी घराने की आलापचारी परम्परा को अत्यंत सुंदर ढंग से आगे बढ़ा रहे हैं। पंडित अरविंद द्वारा सिखाई गई स्वरों की सूक्ष्मता और सुरबहार की स्पष्टता उनके वादन में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पंडित अरविंद पारिख अपने शिष्य डॉ. अश्विन के बारे में बात करते हुए कहते हैं, "अश्विन की सितार और सुरबहार वादन शैली अत्यंत मधुर, आध्यात्मिक, शांत और आत्मविश्वास से भरी है, जो श्रोताओं के हृदय को छू जाती है।"[i] सितार और सुरबहार वादन में निपुणता प्राप्त करने की प्रक्रिया में एक विशेष प्रकार की निरंतरता और मधुरता है। अपने गुरु पंडित अरविंद पारिख की तरह, वे राग के भावनात्मक पक्ष को उभारने पर विशेष ध्यान देते हैं और स्वरों की शुद्धता पर विशेष बल देते हैं।

उनकी वादन शैली में ख्याल और ध्रुपद दोनों का मिश्रण है। डॉ. अश्विन का पसंदीदा राग हेमन्त और ताल चारताल है। उनकी पहली प्राथमिकता सुरबहार वाद्य को धमार ताल में प्रस्तुत करना है। डॉ. अश्विन महेश दलवी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जैसे सुर शिंगार संसद, मुंबई द्वारा 'सुर मणि खिताब' (1997), संस्कृति मंत्रालय, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 'उस्ताद लतीफ खान पुरस्कार' (2007), राजस्थान के जयपुर शहर की प्रसिद्ध संस्था आथक चेष्टा द्वारा ' आथक चेष्टा सम्मान' (2010), के.के.बिरला फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 'सरस्वती सम्मान' (2012), महाराष्ट्र सरकार द्वारा 'जीवन गौरव पुरस्कार' (2015), नाद साधना संस्था,

जयपुर (राजस्थान) द्वारा 'नाद साधक सम्मान' (2015) आदि। वर्तमान में डॉ. अश्विन महेश दलवी सितार और सुरबहार वाद्ययंत्रों के क्षेत्र में अपनी कला के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत की अमीर विरासत को संरक्षित कर रहे हैं।

श्री रामप्रपन्ना भट्टाचार्य:-

श्री रामप्रपन्ना भट्टाचार्य भारत के प्रसिद्ध और प्रभावशाली युवा सितार वादकों में से एक हैं, जिन्होंने तीन दशकों से अधिक के समर्पण और कड़ी मेहनत से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उनका जन्म 22 दिसंबर, 1982 को कलकत्ता में हुआ था और वे वर्तमान समय हैदराबाद में रहते हैं। संगीत हमेशा आप के परिवार में चर्चा का विषय रहा है। लेकिन किसी ने भी इसे पेशे के रूप में नहीं अपनाया। परिवार में संगीतमय वातावरण के कारण श्री रामप्रपन्ना पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने मुख्य रूप से सितार वादन का प्रशिक्षण लेना शुरू किया। श्री रामप्रपन्ना के अनुसार, "मैंने छह वर्ष की आयु में अपने पिता श्री राम उदार भट्टाचार्य से सितार की प्रारंभिक शिक्षा शुरू की। पिता के बाद, मुझे पंडित काशीनाथ मुखर्जी से गहन मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जो उस्ताद विलायत खान और उस्ताद अमीर खान के प्रमुख शिष्य थे। सितार का अध्ययन जारी रखने और सुरबहार सीखने के लिए 2005 में गुरु पंडित काशीनाथ मुखर्जी के कहने पर, पंडित अरविंद पारिख के संरक्षण में आने का सुभाग प्राप्त हुआ जिनसे मुझे कई रचनाएँ, प्राम्प्रिक बंदिशें, दुर्लभ और जटिल राग सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

"[i] श्री रामप्रपन्ना ने देश और विदेश में अनगिनत मंच प्रस्तुतियां दी हैं, जिनकी संगीतकारों, आलोचकों और दर्शकों द्वारा बहुत सराहना की गई है। आपके संगीत को कई मंचों पर महत्वपूर्ण प्रदर्शन मिले हैं, जिनमें डोवर लेन संगीत सम्मेलन (कलकत्ता), श्री संकट मोचन संगीत महोत्सव (वाराणसी), इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी) (नई दिल्ली), नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए) (मुंबई), संगीत नाटक अकादमी (नई दिल्ली) और भारत के बाहर विशेष रूप से यूनाइटेड किंगडम (लंदन), पीटरबरो (यूके), एडिनबर्ग (ग्लासगो), चेम्सफोर्ड (यूके), लीड्स (यूके) आदि शामिल हैं।श्री रामप्रपन्ना प्रसार भारती के अंतर्गत अखिल भारतीय रेडियो (हैदराबाद) के एक मान्यता प्राप्त सितार कलाकार हैं।उन्हें भारत सरकार (संस्कृति मंत्रालय) से कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें राष्ट्रीय छात्रवृत्ति, नई दिल्ली (2001-2002), ग्लासगो हिल्टन होटल, स्कॉटलैंड (2012), पंडित ए. कन्नन मेमोरियल अवार्ड, भारत सरकार (2018) आदि शामिल हैं। श्री रामप्रपन्ना के रंगमंच प्रदर्शनों को एच.सी.एल कॉन्सर्ट्स द्वारा 'मास्ट्रोस इन स्टूडियो', 'साउंड ऑफ सरगम', 'बैठक' जैसी कई श्रृंखलाओं के तहत जारी किया गया है। इसके इलावा, उन्होंने हैदराबाद विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के अध्ययन बोर्ड के सदस्य के रूप में भी कार्य किया है। उन्होंने अकादमिक, कॉर्पोरेट करियर और संगीत कार्यों को एक साथ बखूबी संभाला है, जो अपने आप में एक दुर्लभ उपलब्धि है। श्री रामप्रपन्ना ने कई वर्षों तक ओरेकल कॉर्पोरेशन, टाटा कंसल्टिंग सर्विसेज, कॉग्निजेंट और कैपजेमिनी जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं के लिए काम किया है।

वादन शैली :-

श्री रामप्रपन्ना सितार और सुरबहार दोनों को बहुत ही सुंदर ढंग से बजाते हैं, लेकिन सितार से उनके गहरे लगाव के कारण वे सितार पर अधिक प्रस्तुतियाँ देते हैं। व्यक्तिगत रूप से उनके पसंदीदा राग दरबारी, मालकौंस, भैरव, यमन, झंझोटी आदि हैं। वे गत वादन के लिए तिनताल, रूपक ताल, झपताल और एकताल में रुचि रखते हैं। श्री रामप्रपन्ना समय और परिस्थिति के अनुसार विभिन्न रागों को बजाना पसंद करते हैं। श्री रामप्रपन्ना अपनी सितार वादन शैली में 'गायन अंग' को अत्यंत शुद्ध रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी मींड तकनीक सुर में निरंतरता उत्पन्न करती है, जो सितार वादन की प्रमुख विशेषता है। श्री रामप्रपन्ना एक उत्साही कलाकार बनकर संगीत के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जैसे कि दुर्लभ प्रामाणिक रागों और बंदिशों (रचनाओं) का संग्रह, संरक्षण और दस्तावेजीकरण करना। शास्त्रीय संगीत की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए, श्री रामप्रपन्ना कई वर्षों से संगीत का अध्यापन कर रहे हैं।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त चर्चा के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रसिद्ध सितार वादक पंडित अरविंद पारिख अपने शिष्यों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। पंडित अरविंद पारिख न केवल एक महान सितार वादक हैं, बल्कि संगीत जगत में एक कुशल शिक्षक (गुरु) और मार्गदर्शक भी हैं। उनके शिष्यों का संगीत जगत में एक विशिष्ट स्थान है, क्योंकि अरविंद पारिख के शिष्यों का मुख्य उद्देश्य संगीत की प्राम्प्रिक शैलियों को उच्च स्तर तक ले जाना है। पंडित अरविंद पारिख ने लगभग सन् 1970 में चार शिष्यों के साथ शुरुआत की थी और आज वे 40 से अधिक शिष्यों के गुरु हैं। पंडित अरविंद पारिख अपने शिष्यों को सितार, सुरबहार, शहनाई, रुद्र वीणा और गायन संगीत की शिक्षा भी दे रहे हैं। दिल्ली, बेंगलुरु, कोलकाता, बड़ौदा, सूरत, जयपुर, इंग्लैंड, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया जैसे दूर-दराज के स्थानों से भी शिष्य पंडित जी से संगीत सीखने आते हैं।

इनमें से कई शिष्य पेशेवर संगीतकार हैं, ऑल इंडिया रेडियो से मान्यता प्राप्त कलाकार हैं और कुछ सक्रिय रूप से संगीत अध्यापन में लगे हुए हैं। उन्होंने अपने शिष्यों को नई खोजों के लिए प्रेरित किया है। उनके कई छात्र आज न केवल कलाकार हैं बल्कि संगीतशास्त्र में अच्छे विद्वान और शोधकर्ता भी हैं। पद्म भूषण पंडित अरविंद पारिख एक सच्चे कलाकार का दुर्लभ उदाहरण हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारतीय शास्त्रीय संगीत को समर्पित कर दिया है। अंत में, यह कहा जा सकता है कि पंडित अरविंद पारिख ने न केवल संगीतकारों का एक विशाल स्मूह तैयार किया है, बल्कि संगीत को समझने और सुनने का एक नया दृष्टिकोण भी दिया है। भविष्य में, जब भी इमदादखानी घराना के कलाकारों की चर्चा होगी, पंडित अरविंद पारिख और उनके शिष्यों का नाम सुनहरे अक्षरों में लिया जाएगा।

हवाले और टिप्पणियां:-

1. पंडित अरविंद पारिख के साथ साक्षात्कार, मुंबई, 27 मार्च 2024
2. फोन साक्षात्कार, डॉ. अश्विन महेश दलवी, 20 दिसंबर, 2024
3. फोन साक्षात्कार, श्री दीपक एस. राजा, 14 दिसंबर 2025
4. फोन साक्षात्कार, श्री दीपक एस. राजा, 14 दिसंबर 2025
5. फोन साक्षात्कार, डॉ. अश्विन महेश दलवी, 06 नवम्बर, 2025
6. https://youtu.be/5nhvkITO11Y?si=_STiDRT6snonM01F (दूरदर्शन के डी.डी राजस्थान चैनल पर प्रसारित कार्यक्रम 'सुप्रभात, धरती धोरां री' से प्राप्त जानकारी के अनुसार) 10 अक्टूबर 2025
7. पंडित अरविंद पारिख के साथ साक्षात्कार, मुंबई, 26 मार्च 2024
8. फोन साक्षात्कार, श्री रामप्रपन्ना भट्टाचार्य, 04 दिसम्बर, 2025